Pratnakīrti Oriental Research Institute

(Arazi no. - 469, Satyam Nagar Colony, Bhagwanpur, B.H.U., Varanasi, 221005)

लौकिक-संस्कृतसाहित्य-विश्वकोष

अपने स्थापना-वर्ष से ही यह संस्थान लौकिक-संस्कृतसाहित्य-विश्वकोष के निर्माण हेतु प्रयत्नशील है और सीमित संसाधनों के बावजूद इस दिशा में कार्यरत है। इस कोष में लौकिक संस्कृत-साहित्य की समस्त दृश्य/श्रव्य विधाओं, अंग-उपांगों समेत समग्र काव्य, छन्द एवं नाट्यशास्त्र, (रचनाकार एवं रचना), इन पर टीका, टीकाओं पर टीका, इनके आश्रयदाता आदि तथा इत्यादि से सम्बन्धित प्रविष्टियाँ संकलित की जानी हैं। संस्थान के दो सदस्यों के अथक परिश्रम स्वरूप आज तक इस विश्वकोष हेतु ५००० से अधिक प्रविष्टियाँ जुटाई जा चुकी हैं और अपनी प्रविधि में कार्ड-विधि द्वारा सुरक्षित एवं अद्यतन रूप में प्राप्त हैं।

प्रस्तुत विश्वकोश का निर्माण निम्नलिखित दो प्रविधियों के अन्तर्गत विचाराधीन है –

1. संस्थान इस परियोजना को अपने स्तर पर पूर्ववत् अपनी रूपरेखा, प्रविधि और संसाधनों के अन्तर्गत संचालित करेगा और विश्वकोष का निर्माण करता रहेगा।

2. उपरिवत् किन्तु निम्नलिखित पृष्ठों पर अंकित नियमों के अनुरूप अनुकूल प्रविष्टियाँ (समय-समय पर संशोधित/परिमार्जित शोधपत्र/आलेखों से प्राप्त सामग्री) मिलने पर इन्हें विश्वकोष में समाहित किया जाएगा।

उपर्युक्त विन्दु संख्या-2 के आलोक में; संस्थान अपने समस्त विद्वान् सदस्यों तथा समस्त संस्कृत-समाज को यह सूचित करता है कि –

"वे अपने शोध-क्षेत्र के अनुरूप विधा/विषय के अन्तर्गत सम्बन्धित विधा/विषय/कवि/उनके साहित्य आदि पर शोध-पत्र/आलेख के माध्यम से उपर्युक्त विश्वकोष के निर्माण में अपना योगदान दे सकते हैं।"

विद्वान् सदस्यों का यह योगदान संस्कृत-विद्या को उनका योगदान तो होगा ही स्वयं उनके भी यश और अर्थ दोनों प्रकार के लाभ का कारण भी होगा। यश-लाभ पर विशेष नहीं कहना, अर्थ-लाभ के सन्दर्भ सूचित करना है कि –

> 'प्रत्नकीर्ति' पत्रिका में प्रकाशित सामग्री का उपयोग यदि 'संस्कृतसाहित्य का बृहद् इतिहास' और 'लौकिक संस्कृतसाहित्य विश्वकोष' तथा 'विश्वकोष एप्' में होता है तो इसका पारिश्रमिक (रॉयल्टी) तीनों स्तर पर पृथक् पृथक्, भारत-सरकार एवं संस्थान के तत्कालीन नियमों के अनुरूप लेखकों को देय होगा।

संस्थान के विद्वान् सदस्यों तथा सार्वभौम संस्कृत-सामज के व्यक्तिमात्र से यह प्रार्थना है कि उपर्युक्त के आलोक में और निम्नलिखित तथ्यों के सापेक्ष अपने-अपने शोध-क्षेत्र के अनुरूप विधा/विषय के अन्तर्गत सम्बन्धित विधा/विषय/कवि/उनके साहित्य आदि पर शोध-पत्र/आलेख/सम्बन्धित सामग्री प्रेषित कर इस बृहत्काय सारस्वत-यज्ञ की सम्पूर्ति में सहायक बनें।

प्रविधि

उपर्युक्त परियोजनाओं में सम्मिलित की जाने वाली प्रविष्टियाँ प्रथम स्तर पर 'प्रत्नकीर्ति' (ऑन-लाइन रिसर्च जर्नल) पत्रिका में एक शोधपत्र/शोध-आलेख (कवि/कृति-परिचय, कवि/कृति-विवरण, कवि/कृति-विश्लेषण, कृतियों पर टीका, टीकाओं पर टीका, समीक्षा, आलोचना, तुलना, टिप्पणी, नोट्, कवियों के आश्रयदाता आदि परक) के रूप में प्रकाश्य होंगी।

'प्रत्नकीर्ति' में प्रकाशित यह सामग्री कालान्तर में (सामग्री के मूल-लेखक या उसके अभाव में इस पर कार्य करने वाले सह-लेखक द्वारा) संशोधित/परिमार्जित अवस्था में संस्कृत-साहित्य का बृहद् इतिहास में समाहित की जाएगी।

बृहद् इतिहास में प्रकाशित सामग्री कालान्तर में (सामग्री के मूल-लेखक या उसके अभाव में इस पर कार्य करने वाले सह-लेखक द्वारा) संशोधित/परिमार्जित अवस्था में विश्वकोश में समाहित की जाएगी।

विश्वकोष में प्रकाशित सामग्री कालान्तर में (सामग्री के मूल-लेखक या उसके अभाव में इस पर कार्य करने वाले सह-लेखक द्वारा) संशोधित/परिमार्जित अवस्था में विश्वकोश-एप् में समाहित की जाएगी।

इस प्रकार सम्मानित विद्वान् सदस्यों तथा सार्वजनिक क्षेत्रों के विद्वानों का यह योगदान संस्थान की तीन विशिष्ट परियोजनाओं में शामिल की जाएँगी। अर्थात् विद्वानों का उपरिवत् एक योगदान (शोधपत्र/आलेख) संस्थान की तीन परियोजनाओं की पूर्ति में सहायता प्रदान करेगा। इसे निम्नलिखित रूप में समझा जा सकता है–

'प्रत्नकीर्ति' पत्रिका में सम्बन्धित विषय पर शोधपत्र / आलेख

⇩

'प्रत्नकीर्ति' प्रकाशित सामग्री का संस्कृतसाहित्य का बृहद् इतिहास में उपयोग

⇩

संस्कृतसाहित्य का बृहद् इतिहास में प्रकाशित सामग्री का 'लौकिक संस्कृतसाहित्य विश्वकोश' में उपयोग

⇩

'विश्वकोश' में प्रकाशित सामग्री का 'लौकिक-संस्कृत-साहित्य-वेब् ॲप्लिकेशन' में उपयोग

शोधपत्र/आलेख/सामग्री-निर्माण प्रविधि

संस्थान की षाण्मासिक ऑन-लाइन पत्रिका 'प्रत्नकीर्ति'; प्राच्यविद्या, भाषा एवं विषयों पर गुणवत्तापूर्ण सामग्री प्रकाशित करने हेतु समर्पित है किन्तु इसमें प्रकाशित 'संस्कृत-साहित्य' से सम्बन्धित उपयुक्त सामग्रियों का उपयोग उपर्युक्त परियोजनाओं के संचालन में किया जान है। अतः लेखकों से निवेदन होगा कि यदि वह इन परियोजनाओं में सम्मिलित होने हेतु सामग्री भेज रहे हैं तो कृपया आश्वस्त हो लें कि -

- इस प्रकार के किसी भी शोधपत्र/आलेख को लिखने से पूर्व कृपया यह सुनिश्चित कर लें कि यह शोधपत्र/आलेख निम्नलिखित (अगले पृष्ठों पर उल्लिखित) तथ्यों से अवगत हो कर लिखा गया है।

- शोधपत्र/आलेख 'प्रत्नकीर्ति' में प्रेषित करने से पूर्व कृपया स्पष्ट शब्दों में लिखें कि शोधपत्र/आलेख निम्नलिखित में किस कालखण्ड हेतु भेजा जा रहा है –

  1. 'ज्ञात एवं विश्लेषित कवि/साहित्य' कालखण्ड हेतु
  2. 'आधुनिक संस्कृत-कवि/साहित्य' कालखण्ड हेतु
  3. 'अद्यतन कवि/साहित्य' कालखण्ड हेतु

कवियों का वर्गीकरण

हालाँकि संस्कृत-साहित्य का बृहद् इतिहास शीर्षक संस्थान की परियोजना में संस्कृत-साहित्य के काल और इनके कवियों का वर्गीकरण कई रूपों और सम्प्रत्ययों में किया गया है किन्तु यहाँ उनका उल्लेख न करते हुए लेखकों की सुविधा हेतु सरलीकृत वर्गीकरण प्रस्तुत किया जाता है। प्राप्त प्रविष्टियों को विविध परियोजनाओं के सम्पादक उन-उन कालखण्डों और वर्गों में समाहित कर लेंगे।

1) ज्ञात एवं विश्लेषित कवि, व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व

1.1. प्राचीन एवं मध्यकालीन ऐसे कवि एवं उनका साहित्य जिन पर भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों ने अपने असुन्धान-परक निष्कर्ष स्थापित किए हैं और यह निष्कर्ष विश्व-स्तर पर मान्य हैं; अथवा प्रारम्भिक अनुसन्धान किए हैं और तथ्य किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुँचा, विवादित रहा, या अग्रिम अध्ययन की अपेक्षा रखता है; - ऐसे कवि और उनके काव्य से सम्बन्धित डाटा उपर्युक्त विद्वानों के प्रकाशित सामग्रियों और इन पर अद्यतन अध्ययनों से एकत्रित की जाएगी।

1.2. प्राचीन एवं मध्यकालीन ऐसे कवि जिन पर और जिनके साहित्य पर अध्ययन/विश्लेषण नहीं हुआ है उन पर सम्बन्धित क्षेत्र के विद्वानों से तत्परक अध्ययन/शोध/निष्कर्ष आमन्त्रित किए जाएँगे/हैं,

1.3. इसके अलावा ऐसे प्राचीन एवं मध्यकालीन कवियों और उनकी रचनाओं पर संस्थान के विविध सदस्यों से विद्वत्तापूर्ण आलेख आमन्त्रित हैं। इन आलेखों को 'शोध-पत्र' के रूप में प्रथमतः 'प्रत्नकीर्ति' पत्रिका में प्रकाशित किया जाएगा।

1.4. 'प्रत्नकीर्ति' में प्रकाशित इन शोधपत्रों पर सार्वजनिक संस्कृत-क्षेत्र से प्राप्त समीक्षा/आलोचना/ टिप्पणी- आदि परक विचारों के सापेक्ष इन शोधपत्रों को संशोधित/अद्यतन कर 'संस्कृत-साहित्य का बृहद् इतिहास' (संस्थान की एक महत्त्वाकांक्षी पूर्व परियोजना) के सम्बन्धित भाग तथा खण्ड में इसी विद्वान् के नाम से समाहित कर दिया जाएगा।

1.5. संस्कृत-साहित्य का बृहद् इतिहास के सम्बन्धित भाग/खण्ड में समाहित इस आलेख को पुनः संशोधित/अद्यतन और प्रविधियों से सुसंस्कृत कर उपर्युक्त विश्वकोष में प्रकाशित किया जाएगा।

1.6. 'विश्वकोष' में प्रकाशित यह सम्बन्धित आलेख पुनः 'विश्वकोष एप्' में समाहित कर पश्चात् वेब्-साइट पर प्रकाशित किया जाएगा।

1.7. उपर्युक्त समस्त रूपों में प्रकाशित शोध-सामग्री/शोध-आलेख उसी विद्वान् के नाम से प्रस्तुत किया जाता रहेगा जिसके द्वारा सामग्री प्रथमतः 'प्रत्नकीर्ति' पत्रिका में लिखी/प्रकाशित की गई थी। लेकिन शर्त यह होगा कि -

सम्बन्धित विद्वान् प्रत्येक चरण में-

1. यदि आवश्यक प्रतीत हुआ और प्रत्नकीर्ति के सम्पादक-मण्डल/रिव्यूवर्स सम्बन्धित प्रकाश्य सामग्री में अपेक्षित संशोधन का सुझाव देते हैं तो लेखक उन सुझावों के आलोक में सामग्री प्रस्तुत करेगा।

2. संस्कृत-साहित्य का बृहद् इतिहास के सम्बन्धित भाग तथा खण्ड के सम्पादकों द्वारा इस सामग्री को उपर्युक्त ग्रन्थ/भाग/खण्ड में प्रकाशित करने से पूर्व यदि प्रत्नकीर्ति में प्रकाशित इस आलेख पर समय-समय पर सार्वजनिक संस्कृत-समाज द्वारा उठाई गई आपत्तियों/आलोचनाओं आदि के मद्देनजर

3. संस्कृत-साहित्य का बृहद् इतिहास की प्रविधियों के अनुरूप इसे संशोधित/परिमार्जित करने का सुझाव देते हैं तो विद्वान् लेखक इन सुझावों और प्रविधियों के अनुरूप सामग्री पुनः प्रस्तुत करेगा।

4. संस्कृत-साहित्य का बृहद् इतिहास के सम्बन्धित भाग/खण्ड में प्रकाशित सामग्री को लौकिक-संस्कृत-साहित्य-विश्वकोष में प्रकाशित किए जाते समय विश्वकोश के सम्पादक-मण्डल द्वारा सुझायी गई प्रविधियों के अनुरूप प्रकाश्य सामग्री को विद्वान् लेखक तद्ववत् पुनः प्रस्तुत करेगा।

अन्यथा की दशा में -

1. यदि विद्वान् लेखक अपनी पूर्व प्रकाशित सामग्री को समय-समय पर और सम्बन्धित परियोजनाओं (बृहद् इतिहास, विश्वकोष, वेब-एप्) के सम्पादकों के सुझावों के अनुरूप संशोधित नहीं करता/ किन्हीं कारणों से संशोधन हेतु उपलब्ध नहीं होता तो ऐसी प्रविष्टियों (कवि, रचना आदि) को प्रथम उपर्युक्त विद्वान् के नाम से और पुनः इन प्रविष्टियों पर कार्य करने वाले अन्य विद्वानों के नाम से संयुक्त रूप में प्रकाशित किया जाएगा।

2. उपरिवत् संशोधित/परिमार्जित प्रविष्टियों के बावजूद यदि सम्बन्धित परियोजनाओं के सम्पादक/सम्पादक-मण्डल को उचित प्रतीत हुआ तो वह/वे इन प्रविष्टियों में अन्य बौद्धिक उपलब्धियों (सम्बन्धित विषय/क्षेत्र के विद्वानों के कर्तृत्व/विचार/निष्कर्ष आदि) को उचित प्रविधि के अन्तर्गत प्रकाशित कर सकेंगे। किन्तु उपरिवत् मूल प्रविष्टि के लेखक का नाम यथावत् अंकित करेंगे।

2. आधुनिक संस्कृत-कवि, व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व

सम्बन्धित तथ्य पर दृष्टि की भिन्नता हो सकती है, किन्तु इन परियोजनाओं के संचालक की अपनी मान्यता है कि 'आधुनिक-संस्कृत-साहित्य' के परिसीमन का अंतिम दौर 1857-1947 ई. है।

इस कालखण्ड में हुए और वर्तमान संस्कृत-कवियों और उनके साहित्य पर प्रविष्टियों से सम्बन्धित नीति-नियम उपरिवत् 'ज्ञात एवं विश्लेषित कवि - व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व' में विवेचित नीति-नियमों के अनुरूप ही होंगे किन्तु उनके अतिरिक्त कुछ आवश्यक विन्दु और ध्यातव्य होंगे -

a) इस कालखण्ड के कवियों के कर्तृत्व पर प्रविष्टियाँ लिखे जाते समय किसी कृति का सांगोपांग विश्लेषण समसामयिक राष्ट्रीय तथा अन्ताराष्ट्रीय, सामाजिक/नैतिक/ राजनैतिक/धार्मिक/आर्थिक/ परिस्थितियों/मुद्दों/समस्याओं आदि के समानान्तर किया जाना चाहिए।

b) समसामयिक परिस्थितियों से कृति के प्रभावित होने की दशा में सम्बन्धित तथ्य पर कवि की दृष्टि/योगदान/प्रभाव आदि का स्पष्ट (सकारात्मक या नकारात्मक) मूल्यांकन किया जाना चाहिए।

c) समसामयिक परिस्थितियों से कृति के प्रभावित न होने की दशा में, या इनसे इतर विषयों पर कृति के अवस्थित होने पर कवि के देश-काल-परिस्थितियों और उपर्युक्त सामयिक मुद्दों के आलोक में कृति का स्पष्ट (सकारात्मक या नकारात्मक) मूल्यांकन किया जाना चाहिए।

d) उपर्युक्त रूप में कृति के मूल्यांकन से प्राप्त निष्कर्षों द्वारा सम्बन्धित कृति का संस्कृत-साहित्य के इतिहास में स्थान/मूल्य/महत्त्व/योगदान का प्रतिपादन स्पष्ट शब्दों में अंकित किया जाना चाहिए।

e) कलात्मक पक्षों (भाषा/शैली/छन्द-विशेष/प्रयोग-विशेष आदि) पर केन्द्रित कृतियों के विश्लेषण के समय देश-काल-परिस्थितियों से इन पक्षों की सापेक्षता, आवश्यकता, उद्देश्य आदि पर पैनी नज़र रखते हुए कृति का स्पष्ट (सकारात्मक या नकारात्मक) मूल्यांकन किया जाना चाहिए और इस मूल्यांकन से प्राप्त निष्कर्ष के आलोक में कृति का संस्कृत-साहित्य के इतिहास में स्पष्ट स्थान/मूल्य/महत्त्व/योगदान दर्शाना चाहिए।

3. अद्यतन कवि कवि, व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व

का परिसीमन 1948 ई. से लेकर आज के दिनांक तक है। इस कालखण्ड में हुए और वर्तमान संस्कृत-कवियों और उनके साहित्य पर प्रविष्टियों से सम्बन्धित नीति-नियम उपरिवत् 'ज्ञात एवं विश्लेषित कवि - व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व' तथा 'आधुनिक संस्कृत-कवि - व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व' में विवेचित नीति-नियमों के अनुरूप ही होंगे किन्तु उनके अतिरिक्त कुछ आवश्यक विन्दु और ध्यातव्य होंगे –

यह ध्यातव्य है कि भारतीय काव्यशास्त्र की परम्परा ने हर युग में कविता की परिभाषा की, गुणवत्ता के आधार पर उसके भेद-प्रभेद गिने किन्तु पिछली तीन हज़ार वर्षों की इस परम्परा ने कहीं भी यह नियम नहीं बनाया कि किन परिस्थितियों में "कविता' को 'कविता' नहीं कहेंगे।"

इसका एकमात्र कारण कविता का 'सहृदय-संवेद्य' होना है जो भाषा, शैली और प्रविधि के सभी मानकों को तोड़ कर; चंद उन पंक्तियों को भी 'कविता' का दर्जा दे देता है जो काव्यशास्त्रीय नियमों में 'कविता' नहीं कहे जा सकते। ऐसी कविताओं के 'कविता' होने की भी अपनी एक अलग प्रविधि होती है और यह प्रविधि समय की अपेक्षा रखती है। ऐसी कविताएँ जन-मानस में एक लम्बे समय तक जीवित और समादृत रहती हैं।

इन तथ्यों के आलोक में 'अद्यतन कवि, व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व' पर आलेख/प्रविष्टियाँ लिखे जाते समय उपर्युक्त समस्त नीति-नियम अपनाए जाएँगे, सिवाय इसके कि –

(1) आलेख/प्रविष्टियाँ 'प्रत्नकीर्ति' में केवल लेख की तरह प्रकाशित होगा।

(2) इन्हें 'संस्कृत साहित्य के बृहद् इतिहास' में दर्ज नहीं किया जाएगा।

(3) इन्हें 'लौकिक संस्कृत-साहित्य-विश्वकोष' में दर्ज नहीं किया जाएगा।

यह (उपर्युक्त) अपूर्ण सारस्वत-यज्ञ आगे आने वाली संस्कृत-पीढियों के लिए छोड़ा जाएगा कि वह स्वयं अपनी युगीन परिस्थितियों, जीवन और तत्सम्बन्धी मूल्यों के सापेक्ष और मानकों के अनुरूप उस काल तक बची और बच रही कविताओं पर कार्य करे।

विनीत

प्रतापकुमार मिश्र

Note:

किसी विशेष बिन्दु, अंश, तथ्य या जानकारी के लिए सचिव, प्रत्नकीर्ति से सम्पर्क करें या हमें Email करें.